प्रेस विज्ञप्ति

गोविन्द बल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय पंतनगर, जिला- ऊधमसिंह नगर (उत्तराखण्ड)

किसानों की आय में वृद्धि के उपाय सुझाये गये कार्यशाला में

पंतनगर। २३ मार्च, २०१८। पंतनगर विश्वविद्यालय के कृषि महाविद्यालय के कृषि मौसम विभाग द्वारा आज विश्व मौसम दिवस के अवसर पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी-सह-कार्यशाला आयोजित की गयी, जिसके मुख्य अतिथि के रूप में मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, श्री डी.एस. मगर उपस्थित थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंतनगर विश्वविद्यालय के कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा, ने की। इस कार्यक्रम का विषय 'जलवायु परिवर्तन के तहत लघु भूमि धारकों की स्थिरता एवं आय वृद्धि' था, जो नाबार्ड और पंतनगर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुआ।

प्रो. मिश्रा ने कहा कि देश के ५० प्रतिशत किसान अपनी आय से खुश नहीं है और लगभग एक-तिहाई लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं, साथ ही ४० प्रतिशत बच्चे कुपोषित हैं। उन्होंने कहा कि जलवायु परिवर्तन निश्चित ही कृषि में हो रहे प्रयासों को प्रभावित करता है। इसका सामना करने के लिए लगातार शोध हो रहे हैं लेकिन, अभी सघन प्रयास करने की आवश्यकता है। प्रो. मिश्रा ने लघु किसानों को सामुहिक खेती करने, सामुहिक रूप से तकनीकी को अपनाने और कृषि उत्पाद को संगठित रूप से बेचने पर भी जोर दिया तथा बताया कि ई-नाम से पूरे देश के किसान एक ही मण्डी से जुड़ पायेंगे। उन्होंने एकीकृत खेती को अपनाने और उसके फायदे के बारे में बताया, साथ ही किसानों को अपने उत्पाद का मूल्यवर्धन करने की सलाह दी जिससे उन्हें इन उत्पादों का उचित मूल्य मिल सके।

अपने मुख्य अतिथि के संबोधन में डा. मगर ने कहा कि लघु किसानों की आय दुगनी करने हेतु सभी को मिलकर प्रयास करने की आवश्यकता है। साथ ही किसानों की पारिवारिक स्थिरता तथा गांवों से पलायन को भी कम करना होगा। उन्होंने कहा कि किसान देश की आर्थिक व्यवस्था में महत्वपूर्ण घटक होने के बावजूद आज शोचनीय स्थिति में है। डा. मगर ने कहा कि किसानों की आय एक दिन में दुगनी नहीं हो सकती, इसके लिए किसानों को नई तकनीक, बीज, खाद, कृषि उपकरण इत्यादि को स्वीकार करना होगा। उन्होंने राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा बैंकों के माध्यम से सब्सिडी और ऋण प्रदान कराकर छोटे किसानों को सहयोग प्रदान करने की बात कही। डा. मगर ने कहा कि किसान उत्पाद संगठन नाबार्ड द्वारा किया गया एक ऐसा प्रयास है जिसके तत्वावधान में छोटे किसान एक साथ मिलकर अपने स्तर पर कृषि उत्पादों की स्वयं बिक्री कर सकेंगे तथा उन्हें उनके उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त होगा। उन्होंने यह भी बताया कि उत्तराखण्ड में अभी तक ५२ किसान उत्पाद संगठन बनाये गये है और इन्हें सुचारू रूप से चलाने के लिए संगठन के सदस्यों को समय-समय पर प्रशिक्षित किया जा रहा है।

अधिष्ठाता कृषि, डा. जे. कुमार, ने अपने संबोधन में कहा कि बदलते परिवेश में लघु भूमि धारकों की आय बढ़ाने के साथ-साथ खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा को सुदृढ़ रखने के लिए उन्नत तकनीकें ईजाद करनी होंगी। उन्नत बीजों का विकास और उन्हें समय से किसानों तक पहुंचाने का प्रयास करके उत्पादकता भी बढ़ायी जा सकती है। निदेशक प्रसार शिक्षा, डा. वाई.पी.एस. डबास, ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि कृषि क्षेत्र की हालत दयनीय है। किसान खेती छोड़ रहे है क्योंकि खेती में लागत बढ़ रही है और जोत कम होती जा रही है, जिससे लघु किसानों की संख्या बढ़ती जा रही है। उन्होंने कहा कि लघु किसान नई तकनीकों को अपनाने में असमर्थ है, साथ ही प्राकृतिक आपदायें भी किसानों के उत्पाद को प्रभावित करती हैं। उन्होंने लघु किसान के द्वारा खेती के साथ-साथ कृषि संबंधित व्यवसायों को अपनाने की आवश्यकता बतायी। इस कार्यक्रम में उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों से लगभग २५० से भी अधिक किसानों के साथ वैज्ञानिकों एवं शोधार्थियों ने प्रतिभाग किया।

संगोष्ठी-सह-कार्यशाला में किसानों व उपस्थित जनों को संबोधित करते कुलपति, प्रो. ए.के. मिश्रा।